पाठ - 24 राजेंद्र उपाध्याय

मुख्य भाव

'कठपुतली' कविता में कवि ने बढ़ती हुई पराधीनता की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त की है। पराधीनता मनुष्य को, विशेष रूप से युवा पीढ़ी को दिशाहीन बनाती है। छोटी-छोटी सुविधाओं तथा खुशियों के लिए मनुष्य अपनी स्वतंत्रता दूसरों को सौंप देता है, जो गलत है। अपने अस्तित्व और स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए परिश्रम और संघर्ष को अपनाना चाहिए। महान व्यक्तित्व स्वतंत्रता, संघर्ष और परिश्रम के आधार पर जीवन के नए मार्ग तैयार करते हैं। प्रकृति ने हमें ज्ञान तथा विवेक के स्रोत इसलिए दिए हैं कि हम सही-गलत रास्तों का चुनाव स्वयं कर सकें, अपने निर्णय स्वयं ले सकें, विचारों में दृढ़ हो सकें और आत्मनिर्भर बन सकें। यही सार्थक जीवन है।

मुख्य विशेषताएं

अंश - 1

- मनुष्य के कठपुतली बन जाने यानी उसके पराधीन हो जाने की प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है। कवि इसमें स्वयं को भी शामिल करता है। वह कहना चाहता है कि पराधीन जीवन जीने वाला कोई भी हो सकता है - मैं भी, आप भी। वह आत्मालोचन करता है। व्यक्ति ही कठपुतली नहीं बनता एक देश भी दूसरे देश की कठपुतली बन सकता है। जिस तरह स्वाधीनता केवल आर्थिक तथा राजनीतिक ही नहीं होती, मानसिक भी होती है उसी तरह पराधीनता भी मानसिक हो सकती है। पराधीन चेतना व्यक्ति, समाज और देश के विकास को अवरुद्ध करती है।
- इस कविता में कठपुतली पराधीन व्यक्तित्व का प्रतीक है। कठपुतली का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। वह खेल दिखाने वाले की इच्छा के अनुसार कार्य करती है। यह खेल सभी को अच्छा लगता है। लेकिन यदि मनुष्य ही कठपुतली बन जाए तो? हमारे समाज में लोगों को कठपुतली के रूप में रहते-रहते ऐसी आदत पड़ जाती है कि वे यह भूल जाते हैं कि वे पराधीन हैं। ऐसा करने के पीछे हमारा विवेक नहीं कोई भय, लोभ या जीवन की रूढ़ियाँ ही होती हैं। बने-बनाए रास्तों पर चलने वाले लोग सामान्य होते हैं और इन रास्तों को छोड़कर नई राह बनाने वाले महान।

अंश - 2

- कठपुतली बने हुए व्यक्ति के संपर्क में जो भी आता है उसे वह कठपुतली बनाना चाहता है। यानी न वह ख़ुद स्वाधीन है और न ही किसी दूसरे को स्वाधीन देखना चाहता है। इस तरह लोगों को कठपुतली बनाना एक संक्रामक (फैलनेवाले) रोग के समान है। दूसरी ओर जिस आदमी को कठपुतली बनाया जाता है वह भी इसी में अपनी भलाई मानता है, क्योंकि उसे लगता है कि कठपुतली बनकर जितनी आसानी से सुविधाएँ और बने-बनाए रास्ते प्राप्त हो जाते हैं, उतनी आसानी से स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाए रखकर प्राप्त नहीं हो सकते।
- कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आज़ादी का ढोंग करते हुए ज़ोर-शोर से यह घोषणा करते हैं कि वे कठपुतली बनाए जाने के इस खेल में शामिल नहीं होंगे। कठपुतली नहीं बनेंगे यानी अपनी स्वतंत्राता दूसरे को नहीं सौंपेंगे। वे लोग यह प्रदर्शन इसलिए करते हैं कि कठपुतली बनाकर सुविधाएँ देने वाले लोगों

का ध्यान उनकी तरफ़ जाए। दूसरों को पता भी नहीं चलता और वे लोग कठपुतली बना दिए जाते हैं। स्पष्ट है कि दिखावा करने वाले लोग दूसरों को अपनी आज़ादी सबसे पहले सौंपते हैं।

अंश - 3

- कवि उन लोगों की आलोचना करता है, जो स्वतंत्र होने का आडंबर करते हैं, पर हैं वस्तुतः परवश। मानसिक रूप से पराधीन होना बहुत तेज़ी से फैलने वाली सामाजिक बुराई है, क्योंकि एक कठपुतली मनुष्य बहुत से कठपुतली मनुष्य तैयार करता है।
- अंत में कवि वास्तविक कठपुतली और कठपुतली बने मनुष्य के बीच अंतर करता है कि मनुष्य रूपी कठपुतली, वास्तविक कठपुतली से भी ज़्यादा पराधीन है, क्योंकि खेल दिखाने के लिए कठपुतली के केवल हाथ-पैर ही बाँधे जाते हैं, जबकि मनुष्य कठपुतली के आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे होते हैं। कहने का आशय यह है कि पराधीन व्यक्ति वही देखता, सुनता और कहता है जो दूसरा चाहता है। आँख, कान आदि हमारी ज्ञानेंद्रियाँ हैं। प्रकृति ने ये मनुष्य को इसलिए दी हैं कि वह इनके द्वारा स्वयं ज्ञान प्राप्त करे और उसका उपयोग अपनी बुद्धि अपने विवेक से करे। लेकिन हम देखते हैं कि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो न तो अपनी ज्ञानेंद्रियों का उचित और उपयुक्त उपयोग करते हैं और न ही अपनी बुद्धि का। वे दूसरों की कही गई प्रत्येक बात को, चाहे वह गलत ही क्यों न हो आँखें मुंदकर मान लेते हैं। इस तरह वे प्रकृति द्वारा दी गई संपत्ति का सही उपयोग नहीं करते और निरर्थक जीवन बिताते हैं।

शिल्प सौंदर्य

- इसकी भाषा पूरी तरह से सामान्य बोलचाल की भाषा है। यहाँ प्रतीकों का सुंदर प्रयोग हुआ है। यहाँ कठपुतली, डगर, डोर, आज़ाद, भलाई शब्द प्रतीक के रूप में आए हैं।
- कवि ने व्यंग्य-शैली का भी उपयोग किया है। कवि चाहता है कि व्यक्ति अपने अस्तित्व, अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समाज और देश के विकास के लिए बनाए रखे। जो लोग ऐसा नहीं करते उन पर कवि व्यंग्य यानी शब्दों की चोट करता है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. कवि ने 'कठपुतली' को प्रतीक के रूप में क्यों लिया है? स्पष्ट कीजिए।
2. कविता आज के संदर्भ में कितनी प्रासंगिक है?
3. मनुष्य के कठपुतली बन जाने से क्या-क्या हानियाँ होती हैं, तर्कसहित उत्तर दीजिए।